AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

बागे वर उत्तरायणी मेला : बदलता स्वरूप

डॉ0 उमा काण्डपाल
इतिहास विभाग
एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल)
डॉ0 नीरज रुवाली
इतिहास विभाग
एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल)

DECLARATION:I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTEDBY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKEDMY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OFSUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL

सार

उत्तराखंड भारतीय हिमालय का हृदय स्थल है। इसमें दो मंडल कुमाऊँ तथा गढ़वाल है। वर्तमान में अल्मोड़ा , नैनीताल , पिथौरागढ़, ऊधमसिंहनगर , बागे वर तथा चम्पावत जनपद जो कुमाऊँ मंडल के अन्तर्गत आते हैं। इनकी प्र ाासनिक इकाइयों में कई बार परिवर्तन हुए हैं। यहाँ कभी 14 परगनें तथा 80 पट्टीयाँ थी। वैंकेट ने इनकी संख्या में वृद्धि कर 19 परगनें तथा 116 पट्टियाँ , फिर 125 पट्टियों में विभक्त किया।

दानपुर परगना अर्थात् वर्तमान बागे वर जनपद उन्हीं 19 परगनों में से एक परगना हैं, जो 729°, 42°, 1740° अक्षांस से 79°, 28°, 17° पूर्वी दे ाांतर से 80°, 9°, 42° पूर्वी दे ाान्तर के बीच फैला है।

बागे वर जनपद के उत्तर पि चम में ब्रिटि ा गढ़वाल के पैन खोण्डा तथा बघाण परगने चमोली जनपद स्थित हैं। जबकि दक्षिणी सीमा कुमाऊँ के पाली बारामण्डल तथा चौगखा परगनों (अल्मोड़ा जनपद) द्वारा निर्धारित होती हैं। दक्षिण पूर्व के गंगोली तथा उत्तर पि चमी सीमा पर जौहार परगना (पिथौरागढ़ जनपद) स्थित है। यह परगना तीन कत्यूर (मल्ला, तल्ला, विचला) तीन दानपुर (मल्ला, विचला , तल्ला) दुग, कमस्यार वल्ला, कमस्यार पल्ला, रीठागाढ़ तल्ला, रीठागाढ़ मल्ला, खरही तथा

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

नाकुरी पट्टियों में विभक्त है। बागे वर के अन्तर्गत तीन विकास खण्ड–गरूड़ , कपकोट , बागे वर पूर्वतः तथा नाकुला एवं भैसियाछाना विकास खण्ड अ ांतः सम्मिलित है। बागे वर जनपद का क्षेत्रफल कमोवे ा पुराने दानपुर परगने या तहसील का ही है।

बागे वर जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्र लगभग 2046 वर्ग किमी0 है, जिसे अल्मोड़ा जनपद से 37.5 प्रति ात भाग को अलग कर सृजित किया गया है। यह संपूर्ण कुमाऊँ के 99 प्रति ात क्षेत्र को घेरे हुए है। बागे वर जनपद का जनसंख्या प्रति ात 4.18 है। जिलाधिकारी कार्यालय बागे वर से प्राप्त जानकारी के अनुसार बागे वर जनपद के अन्तर्गत 910 राजस्व गाँव है, जो 60 पटवारी क्षेत्र में विभक्त है। इसमें 35 न्याय पंचायेत 416 ग्राम पंचायते एक नगर पालिका तथा 384 वन पंचायते है।

बागे वर जनपद में कुल साक्षरता 80.01 प्रति ात है, जिसमें महिला साक्षरता 69.03 प्रति ात एवं पुरूश साक्षरता 92.33 प्रति ात है। जनपद की ग्रामीण जनसंख्या 250819 है। इसमें पुरूश जनसंख्या 119615 तथा स्त्रियाँ 121204 है। नगरीय कुल जनसंख्या 9079 हैं। जिसमें पुरूश 7411 तथा महिलाओं की संख्या 4368 हैं। अनुसूचित जाति के पुरूशों की एवं महिलाओं की जनसंख्या क्रम ाः 971 व 1011 है।

जनपद का अधिकां ा क्षेत्र केवल दो जलागम गोमती तथा सरयू क्षेत्रों में फैला है, जबकि कुछ गांव पिण्डर तथा कुछ पूर्वी रामगंगा जलागम क्षेत्रों में बसे है।

ग्वालदम–कौसानी श्रेणी के विरचुवा तथा गडवलवूंगा चोटियों से गोमती गरूड़ गंगा तथा उनकी छोटी–छोटी सहायक जलधाराएँ निकलकर बैजनाथ में मिलती हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

सरयू की मुख्य सहायक नदियों में लाहुर, पुंगर, कनलगाड़, गासों, गधेरा (कर्मी गाड़) खेती गंगा, खीर गंगा आदि है। जो बालीघाट, हरसिला, असों, रीठाबगड़, आदि स्थानों पर सरयू से मिलती हैं। सरयू का उद्गम सरमूल अर्थात सहस्त्रों धाराओं के संयोग से निकली सरीता है, जो सौंग से लगभग 80 किमी0 की दूरी पर हैं। यह नदी श्रोतों से नहीं, अन्य प्रमुख नदियों में पिण्डर जिसका उद्गम पिण्डारी ग्लेि ायर हैं। द्वाली में कफनी ग्लेि ायर से आने वाली कफनी गाड़ मिलती है, तो सुंदरढुंगा क्षेत्र से आने वाली गाड़ खाती में पिण्डर से मिलती है। इस क्षेत्र बहुत ही कम गाँव बसे है। मुख्य खाती, दुलम, बाछाम, सोराग, बोर–बलड़ा, बदिया कोट, जैतोली आदि गाँव है। इसके बाद में यह नदी चमोली जनपद में प्रवे ा करती है, तथा कर्णप्रयाग में अलकनंदा से मिलती है। प्रमुख नदी सरयू का जल पनार रामे वरम् में पूर्वी रामगंगो को साथ लेकर सरयू काली नदी में अपने अस्तित्व को समर्पित कर देती है। जहाँ पर महाकाली परियोजना के तहत 280 मीटर ऊँचे बांध के रूप में परिवर्तित होने की संभावना हैं।

अधिकां ा ऊँची चोटियाँ नंदा देवी के दक्षिण पूर्व श्रेणी मे स्थित हैं, जिसमें मेकतोली, बलजूरी मुख्य हैं। इन्ही क्षेत्रों से पिण्डर, सुन्दर ढुंगा, कफनी आदि छोटे बड़े जल या ग्लेि ायर स्थित है।

मौसम की दृश्टि से जनपद की नदी घाटियाँ अत्यन्त गर्मी तथा उमस वाली है, तो कहीं ऊँचे क्षेत्र अत्यंत भीतल। जहाँ घाटी में पारा 80 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है वहीं ऊँचे क्षेत्रों में (0) भून्य से भी कई डिग्री नीचे चले जाता हैं। चार–पाँच माह बर्फ से उत्तरी भाग ढका रहता हैं। इस वृद्धि एवं गिरावट के कारण यहाँ की जलवायु स्वास्थ के लिए लाभप्रद नहीं कही जा सकती हैं। जबकि ऊँचे क्षेत्रों में

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

द किीय स्थलों के साथ–साथ जलवायु स्वास्थ के लिए भी लाभप्रद हैं। यहाँ की अधिकां ा आबादी नदी घाटी में ही बसी हैं।

कुमाऊँ के सभी प्रकार के पर्व यहाँ बागे वर में भी मनाऐ जाते है। वह क्षेत्र जो गढ़वाल से लगा हुआ है उसमें गढ़वाल की परंपरा का प्रभाव देखने को मिलता है। कुछ मल्ला दानपुर का क्षेत्र जो जौहार से मिला है वहाँ पर जौहारी संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। यह प्रभाव उनकी बोली, भाशा, वेशभूशा तथा आचार–व्यवहार में परिलक्षित होता है। त्यौहारों में द ाहरा, दीपावली, घी सक्रांति फूलदेई , जनमाश्टमी, नंदाश्टमी, होली , वै ाखी, ि ावरात्रि , हरेला आदि मुख्य है।

परंतु मकर सक्रांति के अवसर पर लगने वाला उत्तरायणी मेला जिसका एक वि ोश ही महत्व है।

सरयू, गोमती व अदृ य सरस्वती नदी के पावन त्रिवेणी तट पर बसी बागे वर नगरी को कुमाऊँ की का ी के नाम से भी जाना जाता है। इलाहाबाद के प्रयाग की भाँति ही बागे वर का भी वि ोश धार्मिक महत्व है।

उत्तरायणी मेले की भाुरूवात के प्रारंभिक चरण का कही स्पश्ट उल्लेख तो नहीं मिलता है। परन्तु 1868 में ब्रिटि ा सरकार के 'एडकिं ान गजट' में उल्लेख है कि ''बागे वर'' नामक कस्बे में मकर सक्रांति के अवसर पर ''उत्तरायणी'' नामक एक मेला लगता है। इसके आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते है कि उत्तरायणी मेला कई सदियों से चला आ रहा है।

मेले का प्रारंभिक चरण सिर्फ धार्मिक था, ज्योतिशों के अनुसार जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की तरफ आता है तो तब उत्तरायणी पर्व मनाया जाता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

क्योंकि दक्षिणायन भाग पित्रपक्ष का व उत्तरायणी भाग देवपक्ष का माना जाता है। सूर्य जब मकर रा ि ा में संक्रमण करता है तो मकर सक्रांति होती है, मकर सक्रांति के दिन बागे वर में सरयू, गोमती व अदृ य सरस्वती के त्रिवेणी तट पर स्नान का पुराणों में वि ोश महत्व है, जिस प्रकार इलाहाबाद के प्रयाग में वेणी माधव व त्रियुगी नारायण का मंदिर है। उसी प्रकार बागे वर में अदृ य नदी (सरस्वती) के बागनाथ मंदिर के सामने वेणी माधव मंदिर के नीचे से बहने की त्रिवेणी की कल्पना है। इन मंदिरों का बागे वर मे होना त्रिवेणी की पुश्टि करता है।

इसलिए बागे वर को ''उत्तर का प्रयाग'' भी कहा जाता है। पहले के लोगों में आज की अपेक्षा आस्तिकता कई गुना अधिक थी। लोग आज की अपेक्षा अधिक धार्मिक थे , और वे धार्मिक आधार पर ही मेलों में आते थें।

मेले को कुमाऊनी में 'कौतिक' भी कहा जाता है। 'कौतिक' भाब्द हिन्दी के कौतुहल से बना है। अर्थात् 'जिज्ञासा' मेले का एक अर्थ मिलन भी होता है। क्योंकि मेले में अलग–अलग क्षेत्रों से लोग आते थे। और मेलों में ही उनका अपने रि तेदारों से मिलन होता था। तथा इसी मिलन की खु ाी में मेलार्थी झोड़े, चाचरी, भनौले गाकर खु ियाँ मनाते थे।

ऐसा कहा जाता है कि 'चांचरी' की उत्पत्ति 'नाकुरी', (दानपुर) से हुयी थी। यही से चाँचरी सोमे वर से आगे 'झोड़े' में तब्दील हो जाती है। आज से लगभग चार या पाँच द ाक पूर्व नाकुरी, (दानपुर) व कत्यूर (गरूड़) की चाचरियाँ लोकप्रिय थी, और दोनो क्षेत्रों के लोगो के गाने का ढंग भी अलग–अलग था। तब नाकुरी की महिलाएँ तन्दुरस्त होती थी। वह गोल घेरे में हाथ में हाथ डालकर (सामने मुंह कर) चांचरी गाती

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

थी, जबकि (गरूड़) कत्यूर की महिलाएँ सुदंर होती थी। वह एक दूसरे के कंधे में हाथ डालकर पाँव मिलाते हुए चांचरी गाती थी। जबकि (गरूड़) कत्यूर की महिलाएँ सुंदर होती थी। वह एक दूसरे के कंधे में हाथ डालकर पाँव मिलाते हुए चाचरी गाती थी। यही मेले का आकर्शण पहलु होता था।

उत्तरायणी मेले के अवसर पर लोगो की बागे वर में लगने वाली भीड़ पर व्यापारियों की निगाहें रहती थी, जिसे व्यापारियों ने जब पुरी तरह भुनाया तो मेले का दूसरा चरण व्यापारिक हो गया। जिसके परिणामस्वरूप बागे वर एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में उभरा। दानपुर के व्यापारी रिगांल की चटाइयाँ, डाले, सूपे, ऊन का सामान , रमाड़ी के संतरे, बौराणी के कुथले, खरही के ताँबे के बर्तन, लोहाघाट के भदेले, चमड़े के जुते, अन्य कुटीर उद्योंगो के सामान मेले में बेचने के लिए लाते थे। तिब्बत के व्यापारी ऊनी सामान, जम्बू, गंद्राणी , छीपी, आदि जड़ी बुटियाँ लाते थे।

यदि राजनीतिक तौर पर देखा जाए तो राजतंत्र के अंत के बाद अंग्रेजों के भाासनकाल में बागे वर कुमाऊँ के प्रमुख एवं उल्लेखनीय स्थानों में से एक है। दे ा की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण लड़ाई को यहाँ अंजाम दिया गया। जिसके विशय में अध्ययन करने पर यह कहा जा सकता है कि कुली बेगार के खिलाफत का श्रेय चाहे हम तत्कालीन महान स्वतंत्रता सेनानियों को दे लेकिन इसको अजांम देने में बागे वर के क्रांतिकारियों ने अहम भूमिका निभायी है। वैसे भी पैदल रास्ता होने एवं यातायात की अधिक सुविधा ना होने के कारण यह प्रथा (कुली बेगार) राजतंत्र के समय भी मौजूद थी। परन्तु 15 जनवरी, 1821 का दिन, स्थान–बागे वर तथा उत्तरायणी मेला स्वतंत्रता संग्राम में अमर हो गया।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

वर्श 1900 के बाद अंग्रेज भाासकों का जुल्म जब चरम पर था तो स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने मेले में उमड़ी भीड़ को प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया, क्योंकि तब संचार माध्यमों का अभाव था। अगर थोड़े–बहुत संचार के माध्यम उपलब्ध थे। जब आंदोलनकारी आपकी बात मेले में कहते तो वह आसानी से दूर–दराज के गाँवों में पहुँच जाती थी।

कुली उतार आंदोलन आजादी की लड़ाई का महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है। कुली बेगार उतार प्रथा के तहत स्थानीय लोगों को अंग्रेज अफसरों का सामान ढोना पड़ता था, और क्षेत्र आगमन पर उनके भोजन की व्यवस्था करनी पड़ती थी। यह सब मुफ्त और अनिवार्य व्यवस्था थी। कुमाऊँ परिशद में 1920 में इसके विरोध की तैयारियाँ भुरू कर दी थी। दिसम्बर में नागपुर अधिवे ान से लौटने के बाद कुमाऊँ के प्रमुख नेताओं ने 14 जनवरी 1921 को बागे वर के सरयु बगड़ में उत्तरायणी के मौके पर 40 हजार लोगों के साथ कुली बेगार के बहिश्कार की कसम खायी , और तमाम कुली रजिस्टर सरयु में बहा दिये। जन दवाब में इस प्रथा को खत्म कर दिया गया।

कांग्रेस के नागपुर अधिवे ान में आन्दोनकारियों को नई ऊर्जा मिली थी। पण्डित गोविन्द बल्लब, बद्रीदत्त पाण्डे, चिरजीलाल आदि वहाँ से गांधी जी का आ ीर्वाद प्राप्त करके 50 स्वयं सेवकों के साथ 14 जनवरी 1921 को उत्तरायणी के मौके पर बागे वर पहुँचें । मेलें में कुमाऊँ और गढ़वाल से 40 हजार लोग आये थे। बागनाथ में पुजा के बाद जुलुस निकाला गया। स्वयं सेवकों ने लोगों के ढेरों में जाकर सहयोग मांगा , फिर सभा हुई जिसमे बद्रीदत्त पांडे ने किसी भी हालात में कुली बेगार और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

कुली बरदायस नहीं देने के आह्मवन किया। तमाम लोगों ने संगम पर पवित्र जल हाथ में लेकर इस कुप्रथा की सम्पूर्ण बहिश्कार की कसम खायीं। तमाम् प्रधानगण कुली रजिस्टर साथ लेकर आये थे। उन्हें सरयु नदीं मे बहा दिया गया। इसी दिन से लोगों ने बेगार देना बन्द कर दिया। बागे वर की इस घटना के बाद सरकार को यह कुप्रथा बन्द करनी पड़ी। जनता ने बद्रीदत्त पाण्डे को कुर्मांचल केसरी की उपाधि दी। बागे वर की घटना के बारे में गांधी जी ने यंग इण्डिया में लिखा । इसका प्रभाव सम्मपूर्ण था यह एक रक्तहीन क्रान्ति थीं । कुली बेगार आन्दोलन से बागे वर को एक राश्ट्रीय पहचान मिली।

इस आन्दोलन ने जहाँ एक ओर बागे वर के लोगों को आजादी के आन्दोलन से जोड़ा वहीं सरयु बगड़ को भी एक आन्दोलनकारियों के बद्रीनाथ के रूप मे स्थापित भी कर दिया। बाद में भी अनेकों आन्दोलनों को सूत्रपात भी इसी जगह से होता रहा।

''मेले का बदलता स्वरूप''

माघ माह की मकर सक्रांति पर प्रतिवर्श लगने वाला पौराणिक व सांस्कृतिक उत्तरायणी मेला आज अपने अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ रहा है। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ का कुप्रभाव मेले के पारंपरिक व सांस्कृतिक स्वरूप पर भी पड़ा है। यदि हमने मेले के पौराणिक व सांस्कृतिक स्वरूप को बचाने का प्रयास नहीं किया तो हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए यह मेला मात्र एक कहानी बनकर रहा जाएगा।

आज ि ाक्षा का प्रसार है। अधिकां ा लोग ि ाक्षित है। तो आस्तिकता को तर्कों व तथ्यों के जरिये आसानी से तोड़ देते है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में हो रही

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

प्रतिस्पर्धा के चलते युवा पीढ़ी स्नान, पूजा व आस्तिकता को महज समय का अवमूल्यन मानती है।

इसी प्रकार पहले की तरह मेले का व्यापारिक स्वरूप भी परिवर्तित हो गया है। पहले के व्यापारी ऊनी वस्तुओं को आज भी लाते हैं। परन्तु उस समान को खरीदने वाले खरीददारों का अभाव हैं। क्योंकि ऊनी समान के स्थान पर आज लुधियाना के व अन्य सस्ते सामान बाजारों में आ गये हैं।

इसी प्रकार मेले का सांस्कृतिक रूप भी परिवर्तित हो गया है, ना तो आज पारंपरिक वे ाभूशा में दानपुर की महिलाऐं दिखती है और न ही वे सांस्कृतिक कार्यक्रम ही। इन कार्यक्रमों की जगह आज झूले , सर्कस व मौत का कुंआ आदि मनोरंजक कार्यक्रमों ने ले ली है।

बदलतते सामाजिक परिवे ा में उत्तरायणी मेले के प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव आया है।

जैसे– ऊन व रिंगाल का सिमटता व्यवसाय

उत्तराखण्ड के जनपदों में उत्तरका ाी, चमोली, पिथौरागढ़ व बागे वर में ऊन , बांस तथा रिगांल पर आधारित उद्योगों का विस्तार हुआ।

प्राचीनकाल में यातायात व्यवस्था अच्छी नहीं होने के कारण हाथ से बनी वस्तुओं को कपड़ा, तेल व गुड़ आदि वस्तुओं के साथ विनियम होता था। इस प्रकार का व्यापार उत्तराखण्ड में होने वाले उत्सवों , पर्वो, मेलों, त्योहारों में आम प्रचलन में था।

बागे वर के उत्तरायणी में तो राजस्थान, मध्यप्रदे ा, उत्तर प्रदे ा के मैदानी जिलों से लोग अपना सामान लेकर आते थे, तथा भोटांतिक क्षेत्रों के लोगों द्वारा लाई

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

जाने वाली सामग्री दन, चुटके, भाल, पंखी एवं रिगांल का मोस्ट, टोकरियाँ , गंद्रेणी, जम्बू, छिपी आदि जड़ी बूटियों का आदान–प्रदान वस्तु विनियम द्वारा किया जाता था।

परन्तु वर्तमान में स्थितियाँ बिल्कुल परिवर्तित हो गयी है। आज के उत्तरायणी मेले में ऊन एवं रिगांल की जो वस्तुएँ आती है। वह भोटांतिक क्षेत्रों मुन्स्यारी , धारचूला एवं कपकोट में बनायी जाती है, तथा वहीं से मेले मे व्यापार हेतु लायी जाती है।

मुख्य रूप से ये वस्तुएँ कपकोट ब्लाक के झूनी, खलझूनी, बघर, पोथिगं, सूपी, मिकिला, खलपटा, गोमिना, रातिरकेटी आदि गॉवों में बनायी जाती है। रिगांल से 'मोस्टे' (चटाईयाँ), टोकरियाँ, सूपे, डोके, छापरी आदि वस्तुएँ बनायी जाती है, जो गुणवत्ता के आधार पर मूल्य निर्धारित कर बेची जाती है। रिगांल के बाहरी छीलके की बनी वस्तुए अच्छी व मजबूत होती है। जिसका मूल्य अधिक होता है। जबकि रिगांल की अन्दर के छिलके की बनी वस्तुएँ उतनी अधिक मूल्यवान नहीं होती है।

रिगांल के व्यवसाय के सिमटने के कारण

1– वर्तमान समय में कृशि क्षेत्र में इन वस्तुओं का अब अधिक उपयोग नहीं किया जा रहा है। क्योंकि 'मोस्टे' का स्थान अब कपड़े के तिरपाल ने ले लिया है। एक तो यह सस्ता होता है, तथा साथ ही साथ इसके उपयोग एवं रख–रखाव में आसानी भी होती है। जिसके कारण मोस्टे की बिक्री बहुत ही कम रह गयी है। रिगांल के सूपे के स्थान पर अब टिन के सूपे का प्रयोग होने लगा है।

2– साथ ही साथ वन क्षेत्र में रिगांल का कम होना आदि कारणों से इसके कारीगरों को अनेक दिक्कतों का सामना करना पढ़ रहा है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

3— सरकार का भी इन व्यवसायों के प्रति ढुलमुल रवैया ही है।

इसी प्रकार ऊनी कारीगरों एवं विक्रेताओं से बाते करने पर निम्न बातें संज्ञान में आयी है। वर्तमान समय से स्थानीय ऊन के अतिरिक्त तिब्बत से भी ऊन क्रय किया जाता है। ऊन की सफाई–धुलाई की जाती है, और फिर सूत कताई की जाती है, और इस ऊनी थानों से भॉल, पंखी, थुलमे बनाये जाते है। एक पंखी बनाने में 2 किलोग्राम ऊन तथा एक दिन का समय लगता है।

दन (कालीन) बनाने के लिए वर्तमान समय में हाथ से कताई किये गये सूत का प्रयोग नहीं किया जाता है। बल्कि ये सारा सूत पानीपत से मंगाया जाता है। यहाँ से सारा ऊन पानीपत जाता है। जहाँ पर पावर चलित म ीनों से इसकी धुलाई कताई व रंगाई की जाती है। इस सूत को कारीगर पानीपत से खरीद कर लाते है, और फिर दन बुना जाता है। एक दन को बनाने में एक माह का समय तथा 8–9 किलोग्राम , ऊन लगता है। ऊनी कुटीर उद्योगों में अधिकां ा कार्य को महिलायें ही करती है।

अगर प्रतिदिन मजदूरी 60 रूपया मानी जाए तो एक दन बनाने में 1800 रूपया निकलता है, और यदि सूत का मूल्य इसमें जोड़ा जाए तो फिर लागत बढ़ जाती है। परन्तु वास्तव में एक दिन का जो मूल्य मिलता है वह बहुत ही कम होता है। परिणामस्वरूप यह कार्य अब लाभप्रद नहीं रहा है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

ऊन के व्यवसाय के सिमटने के कारण

1– यदि इतिहास पर नजर डाले तो 1962 का भारत चीन युद्ध भी ऊन के व्यवसाय को प्रभावित करने का मुख्य कारण रहा है।

2– इसके अलावा पावर लूम द्वारा बनने वाली पंखी, भॉल आदि वस्तुओं तथा कृत्रिम रे ाों द्वारा बनी कालीन के बाजार में जाने से पावत लूम व सिथेंटिक कालीन पंखी, भॉल अधिक बिक रही है।

3– क्योंकि यह हैंडलूम से सस्ती व दिखने में सुंदर व उन्नत तकनीकी का प्रयोग होने के कारण जल्दी बिक जाती है। जिसके कारण परंपरागत तरीके से बनी ऊन कारीगरों की वस्तुओं को बाजार में इन पावर लूम की बनी वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा करनी पढ़ रही है।

4– सन् 1965 में इन भोटोतिक क्षेत्रों के लोगों को सरकार द्वारा जनजाति व्यवस्था के तहत सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया, जिस कारण आज वे लोग पढ़ लिखकर ऊँचे औधों पर विराजमान है, तथा जो लोग सरकारी नौकरी में चले गये वे इन क्षेत्रों से भी पलायन कर गये।

5– इसके अलावा जो लोग आज ऊन व्यवसाय में लगे है उनका यह मानना है कि इस व्यवसाय को करने वालों को उपेक्षा की दृश्टि से देखा जाता है और जो सरकारी नौकरी पर है उन्हें समाज में अधिक सम्मान प्राप्त है। जिस कारण ये लोग अपने आने वाली पीढ़ी को भी इस व्यवसाय में नहीं लगाना चाहते।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

6– अपनी इस उपेक्षा के कारण अब वर्तमान उत्तरायणी मेले में परंमरागत ऊन व्यवसायी भी पावर लूम के भॉल, पंखी, दन एवं कंबल बेचने लगे है।

अतः अब यह कहने में कोई संकोच नहीं कि ऊन एवं रिगांल कुटीर उद्योग सिमट रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1) मैठाणी प्रो0 डी0डी0 व अन्य (2010) – उत्तराखण्ड का भूगोल, भारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

2) बलूनी दिने□ा चन्द्र – उत्तरांचल संस्कृति लोकजीवन इतिहास एवं पुरातत्व प्रका ा बुक डेपो, बरेली, 2006

3) भारत सरकार जनगणना 2011 एवं सांख्यिकी ।

4) उत्तरांचल ईयर बुक, 2006 , बिनसर पब्लिके□ान,

5) वैश्णव यमुना दत्त – कुमाऊँ का इतिहास मार्डन बुक डेपो, द–माल, नैनीताल 1911

6) पाण्डे बद्रीदत्त – कुमाऊँ का इतिहास, अल्मोड़ा, बुक डेपो, 1937

7) भाकुनी हीरा – संग्रामियों के सरताज बद्रीदत्त पाण्डे, 1989

8) सिंह अयोध्या – भारत का मुक्ति संग्राम 1997।

9) पाण्डे त्रिलोचन – कुमाँउनी लोक साहित्य।

10) भट्ट एस0डी0 – उत्तरांचल गजेटियर।

11) वाल्टन – अल्मोड़ा गजेटियर।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue: 3
December 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

12) **डबराल ि□ाव प्रसाद**– उत्तराखंड का इतिहास भाग–10 , कुमाऊँ का इतिहास (1000–1790)

13) **कायस्थ देवीदास** – इतिहास कुमाऊँ प्रदे ा।

14) **ओकले, गेरोला (1935)** – हिमालयन फोकलेर , इलाहाबाद।

15) **पंडित राम दत्त तिवाड़ी** – कत्यूर का इतिहास।

16) **उनियाल हेमा** – मानसखण्ड कुमाऊँ इतिहास, धर्म संस्कृत, वस्तुि ाल्प एवं पर्यटन, उत्तरा बुक डेपो– 2014

17) **नैथानी ि□ाव प्रसाद** – उत्तराखंड के तीर्थ एवं मंदिर ''पार्वती प्रका ान'' श्रीनगर गढ़वाल।

18) **स्थानीय साक्षात्कार** :– लीला देवी पत्नी स्व0 जयदत्त तिवाड़ी उम्र–84 वर्श

19) **बच्ची राम तिवाड़ी उम्र–91**

20) **पार्वती देवी काण्डपाल , पत्नी स्व0 के□ाव दत्त काण्डपाल** उम्र– **87 वर्श**

21) **तारा देवी पत्नी स्व0 पुरूशोत्तम चंदोला** उम्र– **86 वर्श**

22) **मर्तोलिया य□ाोदा देवी** उम्र– **93 वर्श**

23) **दैनिक समाचार पत्र, क्षेत्रीय पत्रिकायें एवं वेबसाइट।**